Self Respect

07-07-2014

- ✓बच्चे दो तरफ़ से कमाई कर रहे हैं | एक तरफ़ है याद की यात्रा से कमाई और दूसरे तरफ़ है 84 के चक्र के ज्ञान का सिमरण करने से कमाई | इसको कहा जाता है डबल आमदनी और अज्ञान काल में होती है अल्पकाल क्षण भंगुर सिंगल आमदनी | यह तुम्हारी याद की यात्रा की आमदनी बहुत बड़ी है | आयु भी बड़ी हो जाती है, पवित्र भी बनते हो | सभी दुःखों से छूट जाते हो | बहुत बड़ी आमदनी है | सतयुग में आयु भी बड़ी हो जाती है |

- ✓तुमको मत मिलती है ईश्वर की | अभी तुम अपने बाप को याद करो | अपने को ईश्वरीय गवर्मेन्ट समझो | परन्तु तुम हो गुप्त | दिल में कितनी ख़ुशी होनी चाहिए | अभी हम हैं श्रीमत पर | उनकी शक्ति से सतोप्रधान बन रहे हैं |
- ✓ अब तुम हो ज्ञान सूर्यवंशी | फिर सतयुग में कहा जायेगा विष्णु वंशी | ज्ञान सूर्य प्रगटा..... | इस समय तुम्हें ज्ञान मिल रहा है ना | ज्ञान से ही सद्गति होती है | आधाकल्प ज्ञान चलता है फिर आधाकल्प अज्ञान हो जाता है | यह भी ड्रामा की नूँध है | तुम अभी समझदार बने हो |

- ✓सर्विस अनुसार तो वर्सा पाते हो, ईश्वरीय मिशन हो ना | जैसे क्रिश्चियन मिशन, इस्लामी मिशन होती है वह अपने धर्म को बढ़ाते हैं | तुम अपने ब्राह्मण धर्म और दैवी धर्म को बढ़ाते हो | ड्रामा अनुसार तुम बच्चे ज़रूर मददगार बनेंगे | कल्प पहले जो पार्ट बजाया था वह ज़रूर बजायेंगे |
- ✓तुम आत्मायें बाप को पहचान गये हो तो बेहद के मालिक हो गये | मालिक भी नम्बरवार होते हैं | राजा भी मालिक तो प्रजा भी कहेगी हम भी मालिक हैं | यहाँ भी सब कहते हैं ना हमारा भारत | तुम भी कहते हो श्रीमत पर हम अपना स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं, फिर स्वर्ग में भी राजधानी है |

- ✓बच्चे जानते हैं हमको पढ़ाने वाला है बाप | पहले तो यह पक्का निश्चय चाहिए | बच्चा बड़ा होता है तो बाप को याद करना पड़े | फिर टीचर को फिर गुरु को याद करना पड़े | भिन्न-भिन्न समय पर तीनों को याद करेंगे | यहाँ तो तुमको तीनों ही इकट्ठे एक ही टाइम मिले हैं | बाप, टीचर, गुरु एक ही है |
- ✓ यह लक्ष्मी-नारायण भी नहीं जानते कि हमको फिर हार खानी है | यह तो सिर्फ़ तुम ब्राह्मण ही जानते हो | शूद्र भी नहीं जानते | बाप ही आकर तुमको ब्राह्मण सो देवता बनाते हैं | हम सो का अर्थ बिल्कुल अलग है | ओम् का अर्थ अलग है | मनुष्य तो बिगर अर्थ जो आया वह कह देते हैं | अभी तुम जानते हो कि कैसे नीचे गिरते हैं फिर चढ़ते हैं | यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिलता है | ड्रामा अनुसार फिर कल्प बाद बाप ही आकर बतायेंगे |

✓यह एक बाप ही समझाते हैं, मैं कैसे ब्राह्मण फिर सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी डिनायस्टी स्थापन करता हूँ? अभी तुम हो ज्ञान सूर्यवंशी जो फिर विष्णुवंशी बनते हो |

✓तुम जानते हो यह ज्ञान का एक-एक महावाक्य रत्न, हीरे हैं | बच्चों में समझाने की बहुत रिफाइननेस चाहिए |

✓बाप कहते हैं तुम बहुत पुराने आशिक हो | तुम सब आशिकों का एक माशूक है |

- ✓आजकल तो ऐसा बनाया है, जो वहाँ बैठे-बैठे बाम छोड़ेंगे | तुम यहाँ बैठे-बैठे राज्य लेते हो, वह वहाँ बैठे सबका विनाश करा देंगे | तुम्हारा ज्ञान और योग, उनका मौत का सामान इक्वल हो जाता है | यह भी खेल है | एक्टर्स तो सब हैं ना |

- ✓कभी भी कोई पूछे शास्त्रों को तुम मानते हो? बोलो वाह! ऐसा कौन होगा जो शास्त्रों को नहीं मानेगा | हम सबसे जास्ती मानते हैं | तुम भी इतना नहीं पढ़ते हो जितना हम पढ़ते हैं | आधाकल्प हमने पढ़े हैं |

✓वरदान: विकारों रूपी जहरीले साँपों को गले की माला बनाने वाले शंकर समान तपस्वीमूर्त भव

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |